कामना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर-नारि की॥
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु, जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ! करुणारूप करुणा, आपकी सबपर रहे॥

॥ विसर्जनम् ॥

एक परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर आवाहित देव-शक्तियों को भाव-भरी विदाई देते हुए पूजा-वेदी पर अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। सभी प्रार्थना करें कि ऐसा ही देव-अनुग्रह हमें बार-बार मिलता रहे।

ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने, स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः, शीघ्रं देहि प्रसीद मे॥
गच्छ-गच्छ सुरश्रेष्ठ, स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः, तत्र गच्छ हुताशन॥
यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

॥ जयघोष ॥

१. वेद माता गायत्री की— जय
२. यज्ञ भगवान् की— जय
३. वेद भगवान् की जय— जय
४. परमपूज्य गुरुदेव की— जय
५. वन्दनीया माताजी की— जय
५. भारत माता की— जय

(अन्य जयघोष भी समयानुसार बोले जा सकते हैं।)

❀❀❀❀❀

यज्ञ कर्मकाण्ड

संक्षिप्त टिप्पणी

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

दूसरी पारी

बोलिए गायत्री माता की---जय।
यज्ञ भगवान की --------जय
परम पूज्य गुरुदेव की-----जय।
वंदनीया माताजी की------जय।
शान्तिकुञ्ज हरिद्वार की-----जय।

।। पवित्रीकरणम् ।।

सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ से ढकें, मन्त्र के पश्चात् अभिमन्त्रित जल को समस्त शरीर पर छिड़क लें, भावना करें कि हमारा शरीर, मन और अन्तःकरण पवित्र हो रहा है।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु ।।

॥ आचमनम् ॥

एक-एक आचमनी जल स्वाहा के साथ तीन बार मुख में डालें। भावना करें—हमारे तीनों शरीरों को दिव्य-पोषण प्राप्त हो रहा है।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। १।।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।। २।।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा।। ३।।

॥ शिखावन्दनम् ॥

मस्तिष्क सद्विचारों का केन्द्र है, इसमें सदैव देव-भाव ही प्रवेश करने पाएँ। इसी भावना के साथ सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लें, दाहिने हाथ की अँगुलियों को गीला कर शिखा-मूल का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

ॐ मंत्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

1. सभी परिजन अपनी पुष्पांजलि मुख्य पूजा वेदी पर समर्पित करके यज्ञशाला के बाहर आ जाएँ, और यज्ञ महिमा का गान करते हुए यज्ञशाला की परिक्रमा करें।

कृपया सभी परिजन विशेष ध्यान दें-

1. निःस्वार्थ भाव से किया गया प्रत्येक सत्कर्म ही यज्ञ है। श्रमदान सबसे बड़ा यज्ञ है, अतः सभी परिजनों से विनम्र निवेदन है कि यज्ञ के पश्चात् यज्ञशाला के पात्रों एवं यज्ञशाला की सफाई के लिए 10-15 मिनट का समय अवश्य प्रदान करें।

2. श्रमदान सबसे बड़ा यज्ञ है। जो भाई-बहन यज्ञशाला में श्रम हेतु 10-15 मिनट का समयदान देना चाहते हों, वे यज्ञ के बाद यज्ञशाला की सफाई में सहयोग करने की कृपा करें। बहनों से विशेष निवेदन है कि यज्ञशाला के पात्रों की सफाई करने में अपना सहयोग दें।

3. आज जिन परिजनों का नौ दिवसीय अनुष्ठान पूरा हुआ है वे सभी परिजन सुपारी अथवा नारियल का गोला ले लें, शेष सभी परिजन थोड़ी-थोड़ी हवन सामाग्री लेकर खड़े हो जाएँ और स्वाहा के साथ अपनी पूर्णाहुति यज्ञ भगवान को समर्पित करें।

॥ यज्ञ महिमा ॥

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें॥

॥ शान्ति-अभिषिंचनम् ॥

दैहिक, दैविक व भौतिक तापों से सभी को मुक्ति मिले, सर्वत्र शान्ति ही शान्ति व्याप्त हो, इसी भावना के साथ मुख्य पूजा वेदी पर रखे हुए कलश के जल से एक याजक मंत्र के साथ अभिषिंचन की क्रिया सम्पन्न करें। शेष सभी परिजन शान्तिरूपी सुख का अनुभव करें।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः, सर्व ँ शान्तिः। शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

॥ सूर्यार्घ्यदानम् ॥

एक परिजन अभिषिंचन से बचा जल सूर्य देवता को समर्पित करें। शेष सभी याजक सूर्य देवता की ओर मुख करके खड़े हो जायें। भावना करें, सविता देवता की तेजस्विता-प्रखरता हमारे रोम-रोम में समा रही है।

ॐ सूर्यदेव! सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ्यं दिवाकर।
ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः, भास्कराय नमः।।

॥ प्रदक्षिणा ॥

अच्छे मार्ग पर सतत चलते रहने का संकल्प लेते हुए यज्ञ भगवान् को केन्द्र मानकर अपने ही स्थान पर दायें से बायें एक परिक्रमा करें।

ॐ यानि कानि च पापानि, ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिण पदे-पदे॥

॥ पुष्पांजलिः ॥

सभी परिजन अपने हाथ में अक्षत पुष्प लेकर विदाई सत्कार के रूप में पूजा वेदी पर भाव-भरी पुष्पांजलि अर्पित करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त, यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

॥ प्राणायामः ॥

सभी परिजन कमर सीधी करके बैठें, दोनों हाथ गोद में रखें, नेत्र बंद करें, मंत्रोच्चार के साथ प्राणायाम की क्रिया सम्पन्न करें। लम्बी-गहरी श्वास लें, थोड़ी देर रोकें, फिर छोड़ें। भावना करें, हमारे भीतर शरीरबल, मनोबल और आत्मबल की वृद्धि हो रही है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः, ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ ।

॥ न्यासः ॥

सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों को गीलाकर मंत्रोच्चार के साथ निर्दिष्ट अंगों को बायें से दायें स्पर्श करते चलें। भावना करें, ये सभी इन्द्रियाँ देव-कार्य के अनुकूल बन रही हैं।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु। (मुख को)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। (समस्त शरीर पर)

॥ पृथ्वी-पूजनम् ॥

हम जहाँ से अन्न, जल, वस्त्र और ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह मातृभूमि हमारी सबसे बड़ी आराध्या है। श्रद्धापूर्वक एक आचमनी जल धरती-माता को समर्पित कर नमन-वन्दन करें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

॥ चन्दन-धारणम् ॥

सभी याजक दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली में रोली लेकर सहकार एवं सम्मान के साथ एक-दूसरे के मस्तक पर तिलक करें।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

॥ देव-नमस्कारः ॥

सभी याजक हाथ जोड़कर, मस्तक झुकाकर यज्ञ भगवान को प्रणाम करें।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।। - १

॥ गायत्री-मंत्राहुतिः ॥

सभी याजक सविता देवता का ध्यान करते हुए प्रार्थना करें कि, सविता देवता हम सबको बलपूर्वक सन्मार्ग पर आगे बढ़ाएँ। सभी परिजन कमर सीधी करके बैठें। मध्यमा, अनामिका और अँगुष्ठ के सहारे हवन-सामग्री लेकर तेरा तुझको अर्पण का भाव रखते हुए स्वाहा के साथ यज्ञ भगवान् को अपनी आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं गायत्र्यै इदं न मम।।

॥ अनिष्ट निवारणार्थं अभीष्ट संवर्द्धनार्थं आहुतिः ॥

ये आहुतियाँ परिवर्तनकारी महाकाल को समर्पित हैं। उनकी प्रेरणा से जागृत आत्माओं में साहस का संचार हो, सदाचरण के शुभ संस्कार सबमें जागृत हों तथा भ्रष्टाचार की कुप्रवृत्ति का समूल नाश हो। इसी भावना के साथ शिव-गायत्री मंत्र से आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ पंचवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि,
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं रुद्राय इदं न मम।।

।। सूर्य गायत्री मंत्राहुति ।।

सविता देवता के विधेयात्मक लाभ हम सभी को प्राप्त हों, इसी भाव के साथ सूर्य गायत्री मंत्र से आहुतियाँ समर्पित करें।

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

यज्ञ कार्य के विधि-विधान में कोई त्रुटि रह गयी हो, दूसरों से कुछ अनुचित व्यवहार बन पड़ें हों, उसके लिए सभी याजक हाथ जोड़ कर यज्ञ भगवान से क्षमा-प्रार्थना करें।

ॐ आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर! ।। १ ।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे ।। २ ।।
यदक्षरपदभ्रष्टं, मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर! ।। ३ ।।
यस्यस्मृत्या च नामोक्तया, तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णताम् याति, सद्यो वंदे तमच्युतम् ।। ४ ।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म, प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः, सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः ।। ५ ।।

॥ साष्टाङ्ग नमस्कारः ॥

कण-कण में व्याप्त परमात्म सत्ता को हाथ जोड़कर, मस्तक झुका कर श्रद्धापूर्वक नमन-वन्दन करें।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।

॥ शुभकामना ॥

प्राणि-मात्र के कल्याण की कामना करते हुए सभी परिजन अंजलि फैला कर यज्ञ भगवान् से शुभकामना करें।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्, न्याय्येन मार्गेण मही महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।।१।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ।। २ ।।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां, विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं, देहि मे हव्यवाहन ।। ३ ।।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।
ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

॥ घृतावघ्राणम् ॥

प्रणीता पात्र में टपकाया हुआ घृत सभी याजक दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग में ले लें। दोनों हथेलियों पर मलकर, यज्ञ कुण्ड की ओर इस तरह रखें, मानो उन्हें तपाया जा रहा हो। मंत्र के पश्चात गायत्री मंत्र बोलते हुए सूँघें और मुखमण्डल तथा कमर के ऊपरी भाग पर लगायें। भावना करें यज्ञीय ऊर्जा को हम आत्मसात् कर रहे हैं।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि , तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेऽसि, आयुर्मे देहि।
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चो मे देहि। ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽ, उनन्तन्मऽआपृण।
ॐ मेधां मे देवः, सविता आदधातु। ॐ मेधां मे देवी, सरस्वती आदधातु।
ॐ मेधां मे अश्विनौ, देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

॥ भस्मधारणम् ॥

जीवन का अन्त भस्म की ढेरी के रूप में होता है। हम मन, वचन, कर्म से ऐसे विवेक-युक्त कार्य करें, जो जीवन को सार्थक बनाने वाले सिद्ध हों। इसी भावना के साथ स्फ्य पात्र से भस्म निकाल कर सभी परिजन दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली में भस्म ले लें। मंत्र के साथ निर्दिष्ट अंगों पर क्रमशः लगाते चलें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्, इति ग्रीवायाम।।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्, इति दक्षिणबाहुमूले।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्, इति हृदि।।

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा।
इदं सूर्याय इदं न मम।।

॥ महामृत्युञ्जय-मंत्राहुतिः ॥

व्याख्या- आज इन..... परिजनों का जन्मदिन है। इनके स्वास्थ्य लाभ एवं मंगलमय जीवन तथा दीर्घायुष्य की कामना करते हुए,

साथ ही आज इन परिजनों..... का विवाह दिन है। इनके सुखी-सफल दाम्पत्य एवं मंगलमय जीवन की कामना करते हुए.....

साथ ही विशाल देव-परिवार से जुड़े सभी परिजनों की आध्यात्मिक उन्नति एवं नीरोग जीवन की कामना करते हुए विशेष आहुतियाँ यज्ञ भगवान् को समर्पित करें।

विश्व कल्याण की कामना करते हुए विशेष आहुतियाँ यज्ञ भगवान को समर्पित करें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्,
मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा। इदं महामृत्युञ्जयाय इदं न मम्।

सभी परिजन यज्ञ भगवान को प्रणाम कर शीघ्रता से अपना स्थान खाली करने की कृपा करें।

।। महाकाल गायत्री मंत्राहुति ।।

प्रखर-प्रज्ञा के रूप में परम पूज्य गुरुदेव को श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ प्रखर प्रज्ञाय विद्महे, महाकालाय धीमहि,
तन्नः श्रीरामः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं महाकालाय इदं न मम।।

।। महाशक्ति गायत्री मंत्राहुति ।।

सजल-श्रद्धारूपा वात्सल्यमयी माँ, परम वन्दनीया माताजी को श्रद्धापूर्वक अपनी आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ सजल श्रद्धायै विद्महे, महाशक्त्यै धीमहि,
तन्नो भगवती प्रचोदयात् स्वाहा। इदं महाशक्त्यै इदं न मम।।

दिवंगतानां शान्त्यर्थम् आहुतिः

.... में आई विनाशकारी प्राकृतिक दैवी आपदा से हजारों मानव तथा प्राणि-समुदाय अकाल ही काल-कवलित हो गए। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए, साथ ही इस दुर्घटना में जो घायल हो गए हैं, उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ

एवं उनके परिजनों को इस वज्रपात को सहन करने की शक्ति एवं संतुलन के लिए देव शक्तियों से प्रार्थना करते हुए आहुतियाँ प्रदान की जा रही हैं।

ॐ शन्नो मित्रः शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्नऽइन्द्रो वृहस्पतिः,
शन्नो विष्णुरुरुक्रमः स्वाहा। इदं दिवंगतानां शांत्यर्थं इदं न मम।।

।। वरुण गायत्री मंत्राहुति ।।

वरुण देव जल के अधिष्ठाता देवता हैं। धरती पर जल का संतुलन उन्हीं की कृपा से सम्भव है। धरती पर जहाँ जल की आवश्यकता है, वहाँ जल की वर्षा हो, इसी उद्देश्य से यह आहुतियाँ वरुण देवता को समर्पित की जा रही हैं।

ॐ जलबिम्बाये विद्महे, नीलपुरुषाय धीमहि,
तन्नो वरुणः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं वरुणाय इदं न मम्।।

॥ पूर्णाहुतिः ॥

मनुष्य की गरिमा इस बात में है कि वह जो श्रेष्ठ संकल्प करे, उसे पूरा करे, अधूरा न छोड़े। इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन श्रुचि-पात्र में सुपारी अथवा नारियल का गोला ले लें। शेष सभी परिजन थोड़ी-थोड़ी हवन सामग्री लेकर खड़े हो जायें, स्वाहा के साथ यज्ञ भगवान् को अपनी पूर्णाहुति समर्पित करें।

आज जिन परिजनों के अनुष्ठान की पूर्णाहुति है, वे सभी परिजन सुपारी अथवा नारियल का गोला ले लें, शेष सभी परिजन थोड़ी-थोड़ी हवन सामग्री लेकर खड़े हो जाएँ, और स्वाहा के साथ अपनी पूर्णाहुति यज्ञ भगवान को समर्पित करें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ पूर्णादर्वि परापत, सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणा वहा, इषमूर्ज ꣳ शतक्रतो स्वाहा।
ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा।।

सभी परिजन यज्ञ भगवान को प्रणाम कर शीघ्रता से अपना स्थान खाली करने की कृपा करें।

॥ स्विष्टकृत् होमः ॥

यह प्रायश्चित्त आहुति भी कहलाती है। आहुतियों में जो कुछ भूल रह गयी हो, उसकी पूर्ति के लिए नैवेद्य समर्पित किया जाता है। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक याजक श्रुचि-पात्र में मिष्टान्न और घृत भरकर अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही मंत्र के पश्चात् यज्ञ भगवान् को आहुति समर्पित करें।

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं, यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते, सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां, समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम।।

॥ वसोर्धारा ॥

कार्य के आरम्भ में जितनी लगन और उत्साह हो, अंत में उससे भी अधिक बना रहे। स्नेह की धार कभी टूटने न पाये, इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक याजक श्रुचि पात्र में घृत भर लें, धीरे-धीरे धार बनाते हुए यज्ञ भगवान को घृत की आहुति समर्पित करें।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः, पवित्रेण शतधारेण सुप्वा, कामधुक्षः स्वाहा।

॥ नीराजनम्- आरती ॥

आरती उतारने का तात्पर्य है कि यज्ञ-भगवान् का सम्मान, परमार्थ-परायणता का ज्ञान-प्रकाश दसों-दिशाओं में फैले, इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन दीपक प्रज्ज्वलित करें, आरती की थाल में तीन बार जल घुमाकर यज्ञ भगवान् और देव-प्रतिमाओं की आरती उतारें, पुनः तीन बार जल घुमाकर सभी तक आरती पहुँचा दें।